अखरा में होता है संगीत और नृत्य का संगम

जासं, रांची : हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका रूपा सिन्हा ने कहा कि नागपुरी लोक संगीत में अखरा का विशेष महत्व है। इसे आगे बढ़ाने की जरुरत है। अखरा वह जगह है जहां संगीत और नृत्य का संगम होता है। नृत्य और संगीत के खिंचाव से वातावरण को अधिक शक्ति मिलती है। वह इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची क्षेत्रीय शाखा में आयोजित व्याख्यान में बोल रही थी। इसका विषय झारखंड के मधुर एवं पारंपरिक नागपुरी लोक संगीत था। कार्यक्रम की अध्यक्षता शास्त्रीय गायक श्यामा प्रसाद निवोगी ने किया। शाखा के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अजय मिश्रा ने सभी का स्वागत किया।

लोकगीत जनजातियों के जीवन का अभिन्न अंग : रूपा सिन्हा ने लोक संगीत के महत्व के बारे में भी बताया। कहा,लोकगीत जनजातीय लोगों के जीवन का अभिन्न अंग है। वसंत ऋतु में फगुआ और सरहुल उत्सव का बड़ा महत्व है। गीत की शास्त्रीयता को जानने के लिए स्वर समूहों एवं उसके व्याकरण को पहले जानना जरुरी है। ताल लय एवं मात्रा को नियमबद्ध करते हुए लोक गीतों की स्वरलिपियों को बनाना अति आवश्यक है जिससे आने वाली पीढ़ी को लोकगीतों को समझने एवं गाने में आसानी हो।

Talk on Nagpuri Folk Music at IGNCA

PNS ■ RANCHI

Indira Gandhi National Centre for the Arts- Regional Center Ranchi (IGNCA- RCR) organised a lecture on 'The Classical and Traditional Nagpuri Tribal and Folk Music of Jharkhand' on Friday, November 16. Rupa Sinha, Hindustani Classical singer, stage performer & music Tr. KVS Research Scholar UUC Bhubaneswar was the speaker on the occasion.

Classical vocalist and music composer Jharkhand, Pt. Shyama Prasad Neogi also attended the lecture.

Addressing the audience he expressed his joy for being a part of the program and also spoke about traditional folk music of Jharkhand.

During the lecture Sinha spoke about the various forms of Indian folk music as well as the similarities and differences between Nagpuri folk music and the other forms.

She also briefed about the varied musical instruments used with the different forms of folk music across the country.

Discussing the aspects of Nagpuri music, she majorly spoke about the place of music in fine arts, aesthetics of Indian music and the two main streams of music- classical and folk, Nagpuri folk song and tune, grammer of Nagpuri folk music and musical notes and the safeguard of 'Akhra'- the place where music and dance takes place.

Jharkhand folk music is divided in two parts- Janjaatiya Lok Sangeet and Sadaani Lok Sangeet and the instruments used in Nagpuri music are mandar, nagada and dholak.

Hindustani Classical singer Rupa Sinha, Classical vocalist and music composer Jharkhand, Pt. Shyama Prasad Neogi and others during a lecture on 'The Classical and Traditional Nagpuri Tribal and Folk Music of Jharkhand' at IGNCA on Friday. Pioneer Photo

"It is an integral part of the lives of the tribal people. During the spring festival, the vibe of music overpowers the audience.

The play of 'dumkach' backed up by the beats of 'mandar' energizes the atmosphere in the wedding season, followed by the summer season bringing in the tunes of 'udaasi' spreading the flavor of sadness all over.

In the rainy season 'pawas' is sung to commemorate thundering and heavy downpour. Nest arrives the festivals known as 'karma' and 'jeetiya' reigniting the essence of 'Akhra'.

In the munda community 'jadur', 'gena' etc and in oraon community 'khaddi', 'dudhiya' etc illuminate the 'akhra' throughout the year",

Sinha elaborated.

Regional director IGNA-RCR, Dr. Ajay Kumar Mishra welcomed the chairperson, speaker, guests and participants where as Dr. Anjani Kumar Sinha gave a vote of thanks.

आइजीएनसीए का पारंपरिक नागपुरी लोक संगीत पर व्याख्यान, रूपा सिन्हा ने कहा

झारखंड संस्कृति प्रधान राज्य, लोक संगीत को बचाने के लिए 'अखड़ा' को बचाना जरूरी

संवाददाता ▷ रांची

- कोई भी संस्कार हो, उत्सव हो, पर्व-त्योहार हो, मेला-जतरा हो बिना नृत्य-संगीत के संपन्न नहीं होता
- देश के विभिन्न लोक संगीत के बारे में महत्वपूर्ण बातें बतायीं
- विभिन्न क्षेत्रों के लोकगीत प्रस्तुत कर उसके महत्व की जानकारी दी

कार्यक्रम को संबोधित करतीं हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका व रिसर्च स्कॉलर रूपा सिन्हा व अन्य अतिथि.

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आइजीएनसीए) रांची क्षेत्रीय शाखा द्वारा पारंपरिक नागपुरी लोक संगीत पर शुक्रवार को व्याख्यान का आयोजन हुआ. मुख्य वक्ता हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका व रिसर्च स्कॉलर रूपा सिन्हा ने कहा कि झारखंड एक संस्कृति प्रधान राज्य है. यहां के लोक संगीत को बचाने के लिए 'अखड़ा' को बचाना जरूरी है. झारखंड का लोक संगीत दो भागों में बांटा गया है : जनजातीय लोक संगीत व सदानी लोक संगीत. वसंत ऋतु में 'फगुआ' और 'सरहुल' जैसे उत्सव मनाये जाते हैं. कोई भी संस्कार हो, उत्सव हो, पर्व-त्योहार हो, मेला-जतरा हो बिना नृत्य-संगीत के संपन्न नहीं होता. उन्होंने नागपुरी संगीत में इस्तेमाल होने वाले 'मांदर', 'नगाड़ा' व 'ढोलक', ललित कला में संगीत के स्थान, भारतीय संगीत का सौंदर्य शास्त्र, संगीत की दो मुख्य धाराएं : शास्त्रीय व लोकगीत, नागपुरी लोक गीत, धुन, राग, रागिनी और नागपुरी लोक संगीत के व्याकरण के बारे में चर्चा की. देश के विभिन्न लोक संगीत के बारे में भी बताया और लोकगीत प्रस्तुत कर इसके महत्व की जानकारी दी. इसके साथ ही अन्य लोक संगीत व नागपुरी लोक संगीत के बीच समानता व असमानता के बारे में और लोक संगीत में प्रयुक्त किये जाने वाले वाद्य यंत्रों के बारे में भी बताया. व्याख्यान के बाद प्रश्नोत्तर सत्र हुआ. अध्यक्षता शास्त्रीय गायक संगीतकार श्यामा प्रसाद नियोगी ने की. मौके पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय शाखा के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा, डॉ अंजनी कुमार सिन्हा, राकेश कुमार पांडेय व अन्य मौजूद थे.

प्रभात खबर
Sat, 17 November 2018
epaper.prabhatkhabar.com/c/34058753

नागपुरी लोक संगीत के लिए अखरा का बचे रहना जरूरी : रूपा सिन्हा

संवाददाता

रांची : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के मोरहाबादी स्थित क्षेत्रीय शाखा रांची में शुक्रवार को झारखंड के मधु एवं पारंपरिक नागपुरी लो संगीत की शास्त्रीयता पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इसमें बतौर मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका रूपा सिन्हा को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि नागपुरी लोक संगीत के लिए अखरा का बचे रहना बहुत जरूरी है। नागपुरी लोक संगीत अखरा के इर्द-गिर्द ही घूमती है। अखरा वह जगह है जहां संगीत और नृत्य की प्रस्तुति दी जाती है। इस लोक संगीत में अखरा का महत्वपूर्ण योगदान है लेकिन आज अखरा का अस्तिव खतरे में है। अखरा की रक्षा के लिए देश के समस्त लोगों को आगे आने की जरूरत है। लोक

संगीत जनजातीय लोगों के जीवन का एक अभिन्न अंग है। नृत्य और संगीत का खिंचाव गहराई से वातावरण को अधिक शक्ति प्रदान करती है। नागपुरी संस्कृति में चलना ही नृत्य है। बोलना ही संगीत है। वक्ष व नितंब ही मंदार हैं। कोई भी संस्कार हो, उत्सव हो, पर्व-त्यौहार हो, मेला-जतरा हो, बिना नृत्य संगीत के संपन्न हो ही न हीं सकता है। श्रीमति सिन्हा ने अपने व्याख्यान में अन्य लोक संगीत और नागपुरी लोक संगीत के अंतर को स्पष्ट तरीके से बताया। उन्होंने देश में विभिन्न लोक संगीतों में इस्तेमाल किये जानेवाले संगीत वाद्य यंत्रों, शास्त्रीय व लोकगीत, नागपुरी लोक गीत और धुन, राग रागिनी व नागपुरी लोक संगीत आदि की भी विस्तृत जानकारी दी।व्याख्यान में शास्त्रीय गायक व संगीतकार श्यामा प्रसाद नियोगी ने भी अपने विचार रखे। शाखा के निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा ने कार्यक्रम में भाग लेनेवाले प्रतिभागियों को झारखंड के लोक संगीत परंपरा के बारे बताया। कार्यक्रम में इंदिरा गांधी कला केंद्र के डॉ अंजनी कुमार सिन्हा समेत कई प्रतिभागी भी शामिल हुए।

लोक संगीत की शास्त्रीयता व वाद्ययंत्रों का महत्व बताया

शुक्रवार को नागपुरी लोक संगीत की शास्त्रीयता पर व्याख्यान में शामिल विशेषज्ञ।

रांची | संवाददाता

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची क्षेत्रीय शाखा की ओर से कार्यालय परिसर में शुक्रवार को झारखंड के मधुर एवं पारंपरिक नागपुरी लोक संगीत की शास्त्रीयता पर व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता शास्त्रीय गायक एवं टी केवीएस रिसर्च विद्वान रूपा सिन्हा भारत के विभिन्न लोक संगीत के बारे में बताया।

गायन के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के लोकगीत प्रस्तुत कर इसके महत्व की चर्चा की। उन्होंने अन्य लोक संगीत और नागपुरी लोक संगीत में समानता और असमानता के बारे में बताया। भारत सिन्हा ने नागपुरी लोक संगीत परंपरा के विभिन्न पहलुओं के बारे में चर्चा की। उन्होंने ललित कला में संगीत की जगह, भारतीय संगीत के सौंदर्यशास्त्र, संगीत की दो मुख्य धाराओं शास्त्रीय और लोकगीत, नागपुरी लोक गीत और धुन, राग, रागिनी और नागपुरी लोक संगीत के व्याकरण के बारे में बताया। कहा कि नागपुरी लोक संगीत में अखरा का महत्वपूर्ण योगदान है, जिसकी सुरक्षा करने के लिए भारत के समस्त लोगों को आगे आने की जरूरत है।

व्याख्यान

- विभिन्न क्षेत्रों का लोकगीत प्रस्तुत कर इसके महत्व की चर्चा की
- अन्य लोक संगीत और नागपुरी लोक संगीत में समानता और असमानता के बारे में बताया

रूपा सिन्हा ने बताया कि नागपुरी संगीत में मांदर, नागाड़ा और ढोल के इस्तेमाल और उसके महत्व को बताया। कहा कि झारखंड के लोक संगीत को व्यापक रूप से दो भागों में बांटा गया है। जनजातीय लोक संगीत और सदानी लोक संगीत। यह लोकगीत जनजातीय लोगों के जीवन का एक अभिन्न अंग है। वसंत ऋतु के मौसम में फगुआ और सरहुल जैसे उत्सवों को मुख्य रूप से मनाया जाता है। शाखा के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा ने सभी का स्वागत किया। अध्यक्ष पंडित श्यामा प्रसाद नियोगी ने आयोजन की सराहना की। डॉ अंजनी कुमार सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। व्याख्यान के बाद प्रश्न और उत्तर सत्र में दर्शकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

नागपुरी लोक संगीत में अखरा का अहम योगदान : रूपा

इंदिरा गांधी कला केंद्र में व्याख्यान का आयोजन एजुकेशन रिपोर्टर | रांची हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका रूपा...

Dainik Bhaskar
Nov 17, 2018, 03:51 AM IST

इंदिरा गांधी कला केंद्र में व्याख्यान का आयोजन

एजुकेशन रिपोर्टर | रांची

हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका रूपा सिन्हा ने कहा कि नागपुरी लोक संगीत में अखरा का महत्वपूर्ण योगदान है। इसे आगे बढ़ाने की जरूरत है। अखरा वह जगह है, जहां संगीत और नृत्य का संगम होता है। वह इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची क्षेत्रीय शाखा में आयोजित व्याख्यान में बोल रही थी। इसका विषय झारखंड के मधुर एवं पारंपरिक नागपुरी लोक संगीत था।

जनजातीय समाज के जीवन का अभिन्न अंग है लोकगीत

रूपा ने ललित कला में भारतीय संगीत के सौंदर्यशास्त्र की महता को बताते हुए कहा कि लोकगीत जनजातीय लोगों के जीवन का अभिन्न अंग है। वसंत ऋतु में फगुआ और सरहुल उत्सव का बड़ा महत्व है। गीत की शास्त्रीयता को जानने के लिए स्वर समूहों और उसके व्याकरण को पहले जानना जरूरी है। ताल लय और मात्रा को नियमबद्ध करते हुए लोक गीतों की स्वर लिपियों को बनाने से आने वाली पीढ़ी को लोकगीतों को समझने एवं गाने में आसानी होगी। ऐसा करने से ही अखरा को बचाया जा सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता शास्त्रीय गायक श्यामा प्रसाद नियोगी ने की। शाखा के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा ने अतिथियों का स्वागत किया।

With a five-note scale, Nagpuri music stands out

Debjani Chakraborty | TNN

Ranchi: Nagpuri music has been the backbone of the tribal society's cultural heritage in Jharkhand for several centuries now. The unique feature of this genre of music is that it is based on the pentatonic scale or a music scale of five notes only, but sometimes sung with an additional note.

Rupa Sinha, a music expert and classical singer from New Delhi explained the unique features of this music form and its comparison to other forms of folk, spoke on 'The Classical and Traditional Nagpuri Tribal and Folk Music of Jharkhand' at an event here on Friday.

The music expert stressed on the need for research on e traditional Nagpuri songs

"Instead of the traditional seven musical notes, Nagpuri folk songs are generally based on only five notes which is also commonly called pentatonic scale. In certain cases, six notes are also used for the songs which make the ancient folk songs in the language stand out from others. They have a rich heritage and narrative, but it is uniqueness in the tunes that make Nagpuri folk music different from any other folk genre in the country," Sinha said.

Demonstrating how classical renditions of Nagpuri songs can be used to enrich their original composition and complement them, she sang a few traditional Nagpuri numbers on the occasion. Sinha said, "There are two major variations of Nagpuri music—Janjatiya and Sadani—both with their own unique feel and sounds. When we add classical notes to these songs, they are accessorized in a better way without actually changing the true essence of the original music piece."

Airing concern over the fading culture of conserving Nagpuri music, Sinha stressed on the need for research on traditional Nagpuri songs. "We have very few academic materials on Nagpuri music. More students of music should opt for research in the subject and work on consolidating the musical notations of the rich collection of Nagpuri songs. The tribal cultural centres or 'Akhadas' in villages could be used to promote the study of Nagpuri music," she said.